International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 17-02-2026, Accepted: 19-03-2026, Published: 03-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 1-4

दक्षिण भारत में हिन्दी का स्थानमान

जयनागेश एनएम
सहायक प्राध्यापक हिन्दी, मानविक विभाग, कृपानिधि महाविद्यालय बेंगलूर, कर्नाटक, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.2.12091

सारांश
दक्षिण भारत में हिन्दी का स्थान लगातार विकसित हो रहा है। शिक्षा, मीडिया और रोजगार के क्षेत्र में इसकी उपयोगिता के कारण इसे संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया जा रहा है, हालांकि राजनीतिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के चलते इसकी स्वीकार्यता राज्य दर राज्य भिन्न है। हिन्दी की स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक है कि इसे थोपा न जाए, बल्कि संवाद, संस्कृति और शिक्षा के माध्यम से स्वाभाविक रूप से अपनाया जाए। दक्षिण भारत में हिंदी की स्थिति ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कारणों से अलग रही है ।दक्षिण भारत में हिंदी का स्थान काफी सीमित है, जहाँ हिंदी भाषा का व्यापक रूप से उपयोग नहीं किया जाता है। दक्षिण भारत में लोग तमिल, तेलुगु, कन्नड़, और मलयालम जैसी द्रविड़ भाषाओं को अपनी मातृभाषा के रूप में प्रयोग करते हैं। भाषा किसी भी समाज की पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, और दक्षिण भारत में लोग अपनी भाषा की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं। बेंगलुरु में पालकगण अपने बच्चों से हमेशा ही ज्यादातर अंग्रेजी या हिन्दी में बात करते हैं। जब युवा लोग सार्वजनिक स्थान पर मौज मस्ती कर रहे होते हैं, तब भी हमें हिन्दी या अंग्रेजी ही ज्यादा सुनाई पड़ती है। कुछ राज्यों में जैसे तमिलनाडु, " त्रिभाषा सूत्र' को लागू नहीं किया गया है, और हिन्दी की पढ़ाई सीमित है । स्वतंत्रता संग्राम के दौरान दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार सभा की स्थापना (१६१८, मद्रास)

मूल शब्दः हिन्दी, दक्षिण भारत, जटिल, संवेदनाशील, समृद्ध द्रविड भाषाएं, सीमित उपयोग, स्थानीय विरोध, माध्यम प्रभाव, आर्थिक, राजनीतिक, भाषाई अधिकार

हिन्दी, भारत की राजभाषा होने के साथ–साथ सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा भी है। उत्तर भारत में इसका व्यापक प्रसार है, किंतु दक्षिण भारत में हिन्दी को लेकर स्थिति मिश्रित रही है – कहीं स्वागत तो कहीं विरोध। यह शोध–पत्र दक्षिण भारत के प्रमुख राज्यों — कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल और केंद्रशासित प्रदेश पुदुचेरी कृ में हिन्दी के सामाजिक, शैक्षिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक स्थान का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

भूमिका

- हिन्दी भारत की राजभाषा है, लेकिन इसकी स्थिति हर क्षेत्र में समान नहीं है ।
- दक्षिण भारत में हिंदी की स्थिति ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कारणों से अलग रही है ।
- दक्षिण भारत में हिन्दी का स्थानमान एक जटिल और संवेदनशील विषय है, जो भाषा, संस्कृति और

राजनीति से जुड़ा हुआ है । इसे विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है ।

दक्षिण भारत में हिंदी का स्थान काफी सीमित है, जहाँ हिंदी भाषा का व्यापक रूप से उपयोग नहीं किया जाता है। दक्षिण भारत में लोग तमिल, तेलुगु, कन्नड़, और मलयालम जैसी द्रविड़ भाषाओं को अपनी मातृभाषा के रूप में प्रयोग करते हैं।

विस्तार

भाषाई विविधता

दक्षिण भारत में एक समृद्ध भाषाई विविधता है, जिसमें कई प्रमुख द्रविड़ भाषाएँ बोली जाती हैं।

हिंदी का सीमित उपयोग

दक्षिण भारत में हिंदी का उपयोग मुख्य रूप से शिक्षा, प्रशासन और व्यवसाय जैसे क्षेत्रों में सीमित है।

स्थानीय भाषाओं का महत्व

दक्षिण भारत के लोग अपनी स्थानीय भाषाओं के प्रति काफी लगाव रखते हैं और उन्हें बढ़ावा देते हैं।

हिंदी के प्रति विरोध

दक्षिण भारत में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में थोपने के प्रयासों का विरोध भी किया जाता है।

माध्यमों का प्रभाव

हिंदी फिल्मों, टीवी और संगीत के माध्यम से हिंदी का प्रभाव दक्षिण भारत में धीरे–धीरे बढ़ रहा है, लेकिन स्थानीय भाषाओं की पकड़ मजबूत बनी हुई है।

आर्थिक और राजनीतिक कारक

दक्षिण भारत में हिंदी के उपयोग को प्रभावित करने वाले कई आर्थिक और राजनीतिक कारक भी हैं।

भाषाई अधिकार

दक्षिण भारत के लोगों को अपनी भाषाई और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने का अधिकार है, और वे इसके लिए संघर्ष करते हैं।

भाषा की भूमिका

भाषा किसी भी समाज की पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, और दक्षिण भारत में लोग अपनी भाषा की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं।

दक्षिण भारत में हिंदी का प्रभाव

दक्षिण भारत में हिंदी का प्रभाव धीरे–धीरे बढ़ रहा है, लेकिन स्थानीय भाषाओं की पकड़ मजबूत बनी हुई है।
ऐसा माना जाता है कि राजभाषा हिन्दी को लेकर दक्षिण राज्यों समेत अन्य गैर हिन्दी भाषी राज्यों में पूर्वाग्रह होता है, लेकिन क्या हकीकत में भी ऐसा ही है? हिन्दी दिवस के अवसर पर

वेबदुनिया ने यह जानने का प्रयास किया कि आखिर दक्षिण भारत में हिन्दी की स्थिति क्या है और वहां के लोग भारत की राजभाषा को लेकर क्या सोचते हैं? आइए, जानते हैं चार दक्षिण भारतीय राज्यों में हिन्दी की स्थिति के बारे में....

हिन्दी में बात करना आसान

कर्नाटक में हिन्दी का बहुत अधिक प्रभाव नजर आता है। आप कहीं भी जाएं, यह चाहे सिनेमा हो या सब्जियों का बाजार, मॉल्स हो या रेस्त्रां, टैक्सी बुक करनी हो या फिर कपड़े खरीदने हों, सभी स्थानों पर बातचीत हिन्दी में होती है। हिन्दी सीखने से अपनी बात कहना अधिक आसान हो जाता है।

यहां आप अधिक लोगों को अंग्रेजी या हिन्दी में बातचीत करते सुन सकते हैं, कन्नड में कम बातचीत सुनाई देती है। एफएम भी इसके अपवाद नहीं हैं। राज्य में मनोरंजन के सबसे बड़े साधन माल्स हैं, जहां पर अंग्रेजी, हिन्दी का असर दिखाई देता है।

मेरा मानना है कि अपनी संस्कृति को फैलाना हमेशा ही अच्छा होता है क्योंकि इसी से समाज एक पूर्णता प्राप्त करता है। लेकिन इसके बीच में आपको अपनी पहचान नहीं खोनी चाहिए। बेंगलूरू एक कॉस्मोपॉलिटन शहर है जहां पर आपको समूचे देश से आए लोग मिल जाएंगे। अधिक से अधिक भाषाएं सीखना हमेशा ही अच्छा होता है क्योंकि तब ज्यादा लोगों से बातचीत करना सरल हो जाता है।

बेंगलुरु में पालकगण अपने बच्चों से हमेशा ही ज्यादातर अंग्रेजी या हिन्दी में बात करते हैं। जब युवा लोग सार्वजनिक स्थान पर मौज मस्ती कर रहे होते हैं, तब भी हमें हिन्दी या अंग्रेजी ही ज्यादा सुनाई पड़ती है।

कर्नाटक और इसकी भाषा, कन्नड़, की एक समृद्ध विरासत, संस्कृति और परंपरा है। इसलिए मेरी विनम्र मत यह है कि वैश्वीकरण को अपनाते समय और अपनी संस्कृति का संरक्षण करने के दौरान एक अच्छा संतुलन बनाकर रखना चाहिए। –

तमिलनाडु में हिन्दी भाषियों की संख्या बढ़ी: तमिल भारत की एक ऐतिहासिक भाषा है और तमिल लोग अपनी मातृभाषा को बहुत प्यार करते हैं। पर जब हिन्दी की बात आती है तो यह देश भर के लोगों के लिए आम बोलचाल की भाषा है। 1960 के दशक में केन्द्र सरकार ने तमिलनाडु के स्कूलों के पाठ्यक्रम में हिन्दी को दूसरी भाषा बनाया लेकिन द्रविड़ मुनेत्र कझगम (डीएमके) इसके बहुत खिलाफ रही है और इसने तब इसका बहुत विरोध भी किया था। तब सार्वजनिक विरोध को देखते हुए उस समय इस योजना को रद्द करना पड़ा।

पर उन्नीस सौ अस्सी के दशक में निजी स्कूलों में हिन्दी को दूसरी भाषा के तौर पर पढ़ाया जाने लगा। उनका कहना था कि जो लोग हिन्दी नहीं जानते हैं और तमिलनाडु से बाहर रहते हैं तो उनका बने रहना बहुत मुश्किल होगा। हालांकि तमिलनाडु के राजनीतिक दल हिन्दी का विरोध करते हैं लेकिन राज्य के कुछ भागों में छात्र हिन्दी सीखने में रुचि दर्शा रहे हैं। क्योंकि शिक्षा को पूरी करने के बाद नौकरी की तलाश में जब वे उत्तर भारत की ओर जाते हैं तो उन्हें हिन्दी न जानने के कारण मुश्किलों का अनुभव करना पड़ता है। ऐसे लोग न तो दिमाग में अपनी बात को ठीक से रख पाते हैं और वे हिन्दी समझने में भी असमर्थ होते हैं।

हाल ही में, तमिलनाडु में एक जनमत सर्वेक्षण किया गया कि हिंदी सीखने की क्या जरूरत है? ज्यादातर छात्रों ने तमिल और अंग्रेजी के बाद हिन्दी को तीसरी भाषा के तौर पर सीखने में रुचि दिखाई। ऐसे सर्वेक्षणों के आधार पर तमिल छात्रों ने महसूस किया कि आजकल हिन्दी भाषा जानना बहुत महत्वपूर्ण है। हिन्दी भाषा को लेकर तमिलनाडु में यह धीरे–धीरे बदलाव हुआ है। इसलिए हम उम्मीद करते हैं कि तमिलनाडु के छात्र भी 'हिन्दी दिवस' को मनाएं। इस अवसर उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए किसी भी खास अवसर या दिन की जरूरत नहीं है।

हिन्दी समृद्ध भाषा, लेकिन: राजभाषा हिन्दी एक बहुत ही समृद्ध भाषा है, लेकिन तेलुगू भाषी राज्य में इसका प्रचार–प्रसार ठीक नहीं है। राज्य के दैनिक कामों में इसके प्रचार, प्रसार और क्रियान्वयन की यही स्थिति है।

देश के लोगों में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक सम्पर्क भाषा के दौरान इसकी आश्चर्यजनक सेवा को सम्मान देते हुए हिन्दी दिवस मनाया जा रहा है। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना राज्यों में 1999 से यह दूसरी भाषा के तौर पर पढ़ाई जा रही है। वर्तमान स्थिति को देखते हुए हिन्दी को सातवीं कक्षा में शुरू किया जाता है। सरकारी स्कूलों में इसे छठवीं कक्षा से ही पढ़ाया जा रहा है। हिन्दी शिक्षण के लिए जो पुस्तकें निर्धारित की गई हैं, उन्हें बहुत ही आकर्षक और प्रभावी बनाया गया है ताकि सीखने वाला इसे आसानी से सीख ले।

माध्यमिक स्तर पर हिंदी की स्थिति अच्छी है, लेकिन उच्चतर माध्यमिक और स्नातक स्तर पर इसे बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। अंग्रेजी के मुकाबले सरकार द्वारा इसे बहुत कम सहायता दी जाती है। इसलिए बहुत सारे लोग और गैर–सरकारी संगठन दक्षिणी क्षेत्र में इसे विकसित करने के प्रयास कर रहे हैं जहां लोगों की इसको लेकर जागरूकता कम है। इस क्षेत्र में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नई और हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद हिन्दी को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

सार्वजनिक क्षेत्र में राजभाषा के तौर पर हिन्दी का क्रियान्वयन नाममात्र का है क्योंकि यहां जिन अधिकारियों को इसे क्रियान्वित कराना है, उनका इस पर जोर ही नहीं है। विशेषकर बैंकों और केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों में एक अधिकारी नियुक्त किया जाता है जो कि इसके प्रचार–प्रसार के लिए उत्तरदायी है, लेकिन यह अधिकारी अपने कर्तव्यों के प्रति सतर्क नहीं हैं। तेलुगू भाषी राज्यों में इसकी यही स्थिति है।

मलयाली लोगों की हिन्दी में रुचि: केरल के लोग संस्कृति के मामलों में एक स्पष्ट दृष्टिकोण रखते हैं और वे विभिन्न प्रकार की परंपराओं, संस्कृतियों को स्वीकार करने और उन्हें अपनाने में बहुत उदार होते हैं। विभिन्न प्रजातियों के प्रति भी वे ऐसा ही जुड़ाव महसूस करते हैं। इस कारण से वे विभिन्न भाषाओं को भी प्यार करते हैं और उनका सम्मान करते हैं। जहां तक हिन्दी की बात आती है तो मलयाली हिन्दी को सीखने और बोलने में बहुत रुचि रखते हैं। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि अन्य दक्षिण भारतीय राज्यों की तरह से केरल में यह विषय शैक्षिक पाठ्यक्रमों में अनिवार्य है।

मलयालय सीखना बहुत कठिन होता है, इसलिए दूसरी भाषाओं को सीखने और अपनाने में मलयाली बहुत कम समय लेते हैं। हम बहुत से केरलवासियों को क्षेत्रीय भाषाओं को बिना किसी अवरोध के बोलते सुन सकते हैं। वे तमिलनाडु में तमिल, तेलुगू आंध्र और तेलंगाना में तथा कर्नाटक में कन्नड़ बोल सकते हैं क्योंकि वे जहां जाते हैं, रहते हैं वहां वे स्वयं को स्थानीय भाषा से आसानी से जोड़ लेते हैं।

14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है और हालांकि तब केरल में त्योहारों का माहौल होता है, लेकिन तब भी वे इस दिन को विभिन्न तरीकों से हिन्दी के उपयोग को प्रोत्साहित करके मनाते हैं। बहुत सारे स्कूलों में हिंदी आधारित प्रतियोगिताएं होती हैं और केरल हिन्दी प्रचारक सभा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है। इन कार्यक्रमों के तहत मोबाइल्स में हिन्दी बोलने के एप्लीकेशंस, कुछेक चर्च में हिन्दी में प्रार्थना सभाएं भी आयोजित की जाती हैं।

मलयालम पर संस्कृत का गहरा प्रभाव है और इस प्रभाव के चलते मलयाली लोगों को राष्ट्रभाषा के प्रति अभ्यस्त होने में सरलता महसूस होती है। और जहां तक 'ईश्वर की अपनी भूमि' के लोगों को प्रेरित करने की बात है तो किसी विशेष दिन या अवसर की आवश्यकता नहीं होती है।

1. सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से

दक्षिण भारत की प्रमुख भाषाएँ: तमिल, तेलुगु, कन्नड़ा और मलयालम – अत्यंत समृद्ध और प्राचीन साहित्यिक परंपराएँ रखती हैं । इस क्षेत्र में अपनी मातृभाषा को लेकर गर्व की भावना प्रबल है । इसलिए हिन्दी को यहाँ "राष्ट्रभाषा" के रूप में अनिवार्य रूप से थोपे जाने के प्रयासों का अक्सर विरोध होता रहा है ।

2. शैक्षणिक और प्रशासनिक दृष्टिकोण से

दक्षिण भारत के कई स्कूलों में हिन्दी एक वैकल्पिक भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है, परंतु यह ज़रूरी नहीं है । कुछ राज्यों में जैसे तमिलनाडु," त्रिभाषा सूत्र' को लागू नहीं किया गया है, और हिन्दी की पढ़ाई सीमित है ।

3. व्यावसायिक और दैनिक जीवन में हिन्दी

हाल के वर्षों में हिन्दी का उपयोग दक्षिण भारत के महानगरों (जैसे बेंगलूरु, हैदराबाद, चेन्नई में बढ़ा है, विशेषकर प्रवासी उत्तर भारतीयों और बॉलीवुड या टी.वी. मीडिया के प्रभाव के कारण । कई लोग रोजगार के लिए या हिन्दी भाषी ग्राहकों से संवाद के लिए हिन्दी सीखते हैं ।

4. राजनीतिक दृष्टिकोण से

कई दक्षिण भारतीय राजनीतिक दलों ने हिन्दी थोपे जाने के प्रयासों का विरोध किया है । उनका तर्क है कि सभी भारतीय भाषाएँ समान हैं, और किसी एक भाषा को बाकी भाषाओं से तुलना करना प्राकृतिक धर्म का विरुद्ध होगा ।

5. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

- स्वतंत्रता संग्राम के दौरान दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार सभा की स्थापना (१९१८, मद्रास)
- हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के विरोध में द्रविड़ आंदोलन (DMK और अन्य दलों का हिन्दी विरोध) ।

6. सांस्कृतिक और भाषायी विविधता

- दक्षिण भारत में चार प्रमुख द्रविड़ भाषाएँ – तमिल, तेलुगु, कन्नड़ ।

7. हिन्दी और आर्थिक रोजगार पक्ष

- व्यापार, पर्यटन, IT सेक्टर में हिन्दी का व्यावहारिक महत्व ।
- हिन्दी जानने से रोजगार के अवसर बढ़ते हैं – विशेषकर उत्तर भारत से आनेवाले ग्राहकों या कर्मचारियों के साथ यह शिष्टता जरूरी है ।

आंकड़े और सर्वेक्षण (जहाँ तक उपलब्ध हो)

1. कर्नाटक में हिन्दी का स्थानमान

शैक्षिक क्षेत्र: कर्नाटक के विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में हिन्दी एक वैकल्पिक भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। CBSE और ICSE स्कूलों में हिन्दी एक मुख्य विषय के रूप में उपलब्ध है।

सांस्कृतिक प्रभाव: बेंगलुरु जैसे शहरी क्षेत्रों में हिन्दी फिल्मों, टीवी कार्यक्रमों और नाटकों की लोकप्रियता अधिक है।

सरकारी व प्रशासनिक उपयोग: स्थानीय प्रशासनिक काम काज में हिन्दी की भूमिका सीमित है, लेकिन केंद्र सरकार से संबंधित कार्यों में इसका प्रयोग होता है।

सामाजिक स्वीकृति: गैर–कन्नड़ भाषी नागरिकों की बढ़ती संख्या के कारण हिन्दी एक संपर्क भाषा बनती जा रही है।

2. आंध्र प्रदेश में हिन्दी का स्थानमान

शैक्षिक दृष्टिकोण: हिन्दी को तीसरी भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है। स्कूलों में इसके प्रति रुझान बढ़ा है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में।सांस्कृतिक स्वरूप: फिल्मों और टीवी माध्यमों के जरिए हिन्दी का प्रचार–प्रसार होता रहा है।

प्रशासनिक उपयोग: सीमित प्रयोग, मुख्यतः केंद्र सरकार के दायरे तक सीमित।

लोगों का दृष्टिकोण: औसत जनता हिन्दी को उपयोगी मानती है, खासकर रोजगार के अवसरों के संदर्भ में।

3. तेलंगाणा में हिन्दी की स्थिति

इतिहास: हैदराबाद में कभी निज़ाम शासन के दौरान उर्दू प्रमुख भाषा रही, लेकिन हिन्दी का भी प्रसार हुआ।

आज की स्थिति: शिक्षा और संवाद के क्षेत्र में हिन्दी का उपयोग बढ़ रहा है। हैदराबाद में हिन्दी भाषी जनसंख्या भी बढ़ रही है।

प्रशासन: सीमित उपयोग, परंतु राजकीय स्तर पर विरोध नहीं है।

सांस्कृतिक स्वीकृति: बॉलीवुड व टेलीविजन के प्रभाव के कारण हिन्दी को अपनाने का रुझान है।

4. तमिलनाडु में हिन्दी का स्थानमान

इतिहास: 1960 के दशक में हिन्दी विरोधी आंदोलनों के कारण हिन्दी के प्रचार में बाधाएं आईं।

वर्तमान स्थिति: सरकारी स्कूलों में हिन्दी नहीं पढ़ाई जाती, लेकिन CBSE/ICSE स्कूलों में हिन्दी एक लोकप्रिय विषय है।

सांस्कृतिक उपस्थिति: फ़िल्मों और मीडिया के माध्यम से हिन्दी घरों तक पहुंचती है।

जनमानस का रुख: युवा वर्ग में हिन्दी सीखने की रुचि बढ़ी है, विशेषतः करियर की दृष्टि से।

5. केरल में हिन्दी की भूमिका

शैक्षिक क्षेत्र: केरल में हिन्दी को वैकल्पिक भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है। छात्रों का रुझान भी अच्छा है।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण: हिन्दी फिल्मों और गीतों की लोकप्रियता अधिक है।

प्रशासनिक प्रयोग: प्रशासनिक प्रयोग न्यूनतम है।

सामाजिक स्वीकृति: रोजगार के अवसर और भारत के अन्य हिस्सों से संपर्क के लिए हिन्दी को उपयोगी माना जाता है।

6. पुदुचेरी में हिन्दी की स्थिति

भाषाई पृष्ठभूमि: पुदुचेरी में तमिल, तेलुगु, मलयालम और फ्रेंच प्रमुख भाषाएँ हैं, परन्तु हिन्दी भी संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग होती है।

शैक्षिक क्षेत्र: हिन्दी को स्कूलों में वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

संस्कृति: विविध भाषाओं के मिश्रण के कारण हिन्दी को भी कुछ स्वीकृति मिली है।

निष्कर्ष

दक्षिण भारत में हिन्दी का स्थान लगातार विकसित हो रहा है। शिक्षा, मीडिया और रोजगार के क्षेत्र में इसकी उपयोगिता के

कारण इसे संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया जा रहा है, हालांकि राजनीतिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के चलते इसकी स्वीकार्यता राज्य दर राज्य भिन्न है। हिन्दी की स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक है कि इसे थोपा न जाए, बल्कि संवाद, संस्कृति और शिक्षा के माध्यम से स्वाभाविक रूप से अपनाया जाए।

References

1. दक्षिण भारत में हिन्दी का विकास – डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. भाषा और समाज – डॉ. नामवर सिंह
3. हिन्दी भाषा का इतिहास – डॉ. हरदेव बाहरी
4. राजभाषा हिन्दी: समसया और समाधान – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
5. भारत में भाषा नीति – डॉ. लक्ष्मीकांत वर्मा
6. 'केंद्रीय हिन्दी संस्थान (आग्रा) और राजभाषा विभाग – (भारत सरकार) की रिपोर्ट्स